दिसम्बर 2022 वर्ष 1, नंबर 4

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई. मासिक समाचार

"मानव विकास में निवेश के बिना
आर्थिक विकास अस्थिर (unsustainable)
होता है -
और अनैतिक (unethical) भी।"

- अमृत्य सेन
नोबेल पुरस्कार विजेता

खंड

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ईआई. - ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा) 6

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI) 9

दयालबाग़ एजुकेषनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय-सूची

खंड कः डी.ई.आई.

1. 45वां (अंतर) राष्ट्रीय प्रणाली सम्मेलन (एन एस सी 2022) का डी.ई.आई. में आयोजन 3

2. संकाय समाचारः
कला संकाय 4
अभियांत्रिकी संकाय 4
विविध 4

3. स्कूल समाचार 5
डी.ई.आई. पी.वी. गर्ल्स इंटरमीडिएट स्कूल

खंड ख : डी.ई.आई. – ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

4. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 6

5. शिक्षा – मानव पूंजी (Human Capital) की सीढ़ी 6

खंड गः डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (**AADEIs & AAFDEI**)

6. संपादक की डेस्क से 9

7. एकृतियों में पुनर्गमन (Nostalgic Memories)........ 9

8. पलक झपकते ही साल बीत गया | हम आगे बढ़े........ 10

9. हमेशा के लिए डी.ई.आई.!........ 10

10. मेंटरशिप प्रोग्रामः एक सार्थक प्रतिबद्धता........ 11

11. पूर्व छात्र कथन (Alumni Bytes)........ 11

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 12

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

45वां (अंतर) राष्ट्रीय प्रणाली सम्मेलन (एन एस सी 2022) का डी.ई.आई. में आयोजन

45वें (Inter) National Systems Conference (एन एस सी 2022) का सह–आयोजन 26–29 सितंबर 2022 को चौथे अंतर्राष्ट्रीय दयालबाग साइंस ऑफ Consciousnes सम्मेलन (डी एस सी 2022) के साथ दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में सिस्टम्स सोसायटी ऑफ इंडिया की साझेदारी में किया गया। सम्मेलन हाइब्रिड मोड में ''ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी थ्रू लैक्टो–वेजिटेरियन एग्रोइकोलॉजी सिस्टम्स'' विषय पर आयोजित किया गया ।

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट और सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट्स पर कई माह पूर्व सम्मेलन हेतु इच्छित प्रतिभागियों से शोध पत्र मांगे गए, जिसमें 129 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए थे। सभी शोध पत्रों का पुनरीक्षण संबंधित क्षेत्रों के विशेषज्ञों के एक समूह द्वारा किया गया, जिसके आधार पर छत्तीस शोध पत्र मौखिक प्रस्तुति के लिए चयनित हुए, जिन्हें अलग–अलग व्यापक क्षेत्रों में छह सत्रों में विभाजित किया गया, जिनमें से प्रत्येक में छह शोध पत्र सम्मिलित थे, जबकि अन्य इकतालीस प्रस्तुतियाँ को पोस्टर प्रस्तुति के लिए चयनित किया गया। छह मौखिक प्रस्तुति सत्रों के लिए व्यापक क्षेत्र थे – चेतना और साहित्यिक आधारित प्रणालीय; ऊर्जा प्रणालीय; कृषि पारिस्थितिकी; तंत्रय पर्यावरण प्रणालीय; स्वास्थ्य देखभाल प्रणालीय; सूचना और संचार प्रणाली। सम्मेलनों के लिए पोस्टर सत्र संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। शोध पत्र लेखकों के पास व्यक्तिगत रूप से या मौखिक प्रस्तुति के लिए 8 मिनट की अवधि और पोस्टर प्रस्तुति के लिए 3 मिनट की अवधि के पहले से रिकॉर्ड किए गए वीडियो के माध्यम से अपने शोध पत्र प्रस्तुत करने का विकल्प था। तत्पश्चात प्रत्येक प्रश्न और उत्तर के साथ सीधा मौखिक आदान प्रदान किया गया। मौखिक प्रस्तुति के लिए सभी छत्तीस पेपर और बत्तीस पोस्टर प्रस्तुत किए गए। सत्र अध्यक्षों ने अपने संबंधित सत्रों में प्रस्तुत सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र की भी घोषणा की। दो सम्मेलनों के संयुक्त पुरस्कार समारोह में सर्वश्रेष्ठ पत्रों के लिए पुरस्कार और सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया के वार्षिक पुरस्कार प्रदान किए गए।

सम्मेलन में प्रख्यात वक्ताओं द्वारा आमंत्रित वक्तव्य के साथ तीन पूर्ण सत्र आयोजित किए गए:

1. प्रो. रे इसोन, अध्यक्ष, इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर सिस्टम्स रिसर्च, ''सीकिंग ट्रांसफॉर्मेशनः ए प्रैक्सिस फॉर यूजिंग एंड इंस्टीट्यूशनलाइजिंग सिस्टम्स थिंकिंग इन प्रैक्टिस (STiP) इन पॉलिसी सेटिंग्स''।
2. डॉ. एस उन्नीकृष्णन नायर, निदेशक, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, तिरुवनंतपुरम, केरल, ''सस्टेनेबिलिटी इन लॉन्च व्हीकल प्रोग्रैम''।
3. प्रोफेसर अश्विनी पारीक, कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय कृषि–खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली, पंजाब, ''आर वी रेडी टू फीड नाइन बिलियन ?''

संयुक्त सम्मेलन एक जीवंत पैनल चर्चा के साथ संपन्न हुआ, जहां प्रत्येक पैनलिस्ट ने अपनी व्यक्तिगत विशेषज्ञता के आधार पर सम्मेलन अध्यक्ष द्वारा निर्धारित प्रश्नों पर विचार प्रस्तुत किए। तत्पश्चात दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के छात्रों द्वारा एक लघु सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया की वार्षिक आम बैठक (ए जी एम) शुक्रवार, 30 सितंबर, 2022 को आयोजित की गई ।

संकाय समाचार

कला संकाय:

डॉ. निशीथ गौड़ संस्कृत विभाग को फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में व्याख्यान देने के लिए के.एम. आई हिन्दी एवं भाषा विज्ञान संस्थान, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में आमंत्रित किया गया था। दिनांक 11 से 17 नवम्बर, 2022 तक आयोजित संकाय विकास कार्यक्रम के दौरान उन्होंने 'संस्कृत साहित्य की भारतीय परम्परा' विषय पर व्याख्यान दिया।

अभियांत्रिकी संकाय

संस्थान द्वारा प्रस्तावित इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल शाखाओं में यू जी इंजीनियरिंग कार्यक्रम, जो शैक्षणिक वर्ष 2019–20 से 2021–22 के लिए टीयर –1 संस्थानों में राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनबीए) द्वारा मान्यता प्राप्त थे और जिनकी वैधता 30 जून 2022 को समाप्त हो गई थी, उन्हें आगामी शैक्षणिक वर्ष 2022–2023 से 2024–2025 यानी 30 जून 2025 तक के लिए मान्यता प्राप्त हुई ।

विविध:

संकाय समाचार:

30 अक्टूबर से 6 नवंबर, 2022 तक मलेशिया में 'समुदाय आधारित भागीदारी अनुसंधान (सीबीपीआर–कम्युनिटी बेस्ड पार्टिसिपेटरी रिसर्च)' पर 'मिजान के 4 सी' द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में डॉ. रुपाली सत्संगी, डॉ. ज्योति गोगिया और डॉ. सोना दीक्षित ने डी.ई.आई का प्रतिनिधित्व किया। इस प्रतिनिधिमंडल ने मिजान रिसर्च सेंटर हब, फैकल्टी ऑफ लीडरशिप एंड मैनेजमेंट, यूनिवर्सिटी सेन्स इस्लाम मलेशिया (यू एस आई एम) और यूनेस्को चेयर कार्यक्रम में उच्च शिक्षा में समुदाय आधारित अनुसंधान और सामाजिक उत्तरदायित्व में प्रतिभागिता की। यह कार्यशाला 21 सप्ताह के मेंटर ट्रेनिंग प्रोग्राम (एम. टी. पी.) का भाग थी, जिसे नॉलेज फॉर चेंज (के 4 सी) ग्लोबल कंसोर्टियम द्वारा डिवीजन ऑफ कंटीन्यूइंग स्टडीज, विक्टोरिया विश्वविद्यालय के तहत विकसित किया गया था। सत्रों में सामुदायिक जुड़ाव, नैतिक विचार, क्षेत्र अध्ययन विचार, केस स्टडी, स्थिरता के मुद्दे और सीबीपीआर के लिए कला–आधारित गतिविधियों के उपयोग पर चर्चा और व्यावहारिक अभ्यास शामिल था।

विश्वरंग का आयोजन रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (आर. एन. टी. यू), भोपाल द्वारा 14 से 20 नवंबर 2022 तक किया गया। यह एक वैश्विक मंच है जो भारतीय साहित्य, संस्कृति, कला, संगीत और सिनेमा का जश्न मनाता है। विश्वरंग की ऑनलाइन लगभग 42 मिलियन दर्शकों की एक मजबूत उपस्थिति और भागीदारी है और 30 से अधिक देशों में 4 लाख से अधिक पंजीकृत सदस्य हैं और विश्व स्तर पर प्रसिद्ध कलाकारों के साथ जुड़ा है। साहित्य उत्सव की शुरुआत वर्ल्ड पीस एंड हार्मनी वॉक से हुई, जिसमें कई कला प्रेमियों, कलाकारों और साहित्यकारों की भागीदारी देखी गई। अन्य मुख्य आकर्षण थे, जैसे– भारत के ऋषि वैज्ञानिकों की प्रदर्शनी, टैगोर राष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी, उस्ताद याकूब अली खान द्वारा शहनाई प्रदर्शन, पूर्वनरेश और समूह द्वारा संगीत नाटक, 'बंदिश', संजय महाजन और समूह द्वारा गणगौर लोक – नृत्य प्रदर्शन, संगीत संध्या के साथ पापोन और मैथिली ठाकुर, विषयों पर चर्चा, राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली और भारतीय ज्ञान प्रणाली, कला प्रशंसा और समालोचना में चुनौतियाँ,

भारतीय और विश्व कविता, साहित्य, कला और संस्कृति, लेखक को जानें सत्र आदि इसमें डॉ. बृजराज सिंह, डॉ. प्रेम शंकर, डॉ. रंजना पांडे, डॉ.

मोनिका तिवारी और डॉ. सोना दीक्षित ने महोत्सव में भाग लिया और कलाकारों और विद्वानों के साथ चर्चा की।

मलेशिया में डी.ई.आई. प्रतिनिधिमंडल आर एन टीयू में डी.ई.आई. टीम

स्कूल समाचार

डी.ई.आई. पी.वी. गर्ल्स इंटरमीडिएट स्कूल

- 23 नवंबर, 2022 को डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय में सितार कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय था "सितार का परिचय एवं वाद्य विधान" – प्रो. लवली शर्मा, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, डी.ई.आई. ने विभाग के कुछ वरिष्ठ छात्रों के साथ प्रदर्शन करते हुए सितार वादन की तकनीक का परिचय दिया ।

- फेविक्रिल कंपनी द्वारा 28 नवंबर से 30 नवंबर, 2022 तक डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। छात्रों ने कैनवास पेंटिंग, बॉटल आर्ट, कपड़े पर मोल्ड, मिट्टी, अखबार आदि की सहायता से ब्लॉक प्रिंटिंग जैसी कई चीजें सीखीं । फेविक्रिल के प्रशिक्षक श्री नरेंद्र सोलंकी थे।

- गृह विज्ञान विभाग ने 19 नवंबर, 2022 को अमरूद पर आधारित पाक कला प्रतियोगिता का आयोजन किया। डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय के छात्रों ने भी इस प्रतियोगिता में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया और अपनी पाक कला कौशल का प्रदर्शन किया और बहुत ही स्वादिष्ट व्यंजन परोसे। प्रतियोगिता के विजेता थे– जाह्नवी शर्मा–द्वितीय पुरस्कार, गीत सत्संगी, संस्कृति मथुरिया, उमा कुशवाह, कशिश–तृतीय पुरस्कार और दिव्या कुशवाह, अंकिता पचौरी और सुमति कुमारी–सांत्वना पुरस्कार।

- पुनीत सागर अभियान– एन.सी.सी. द्वारा हाथी घाट, कचहरी रोड, आगरा में की सफाई के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस सफाई कार्यक्रम में डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय के एन.सी.सी. कैडेटों ने भी भाग लिया। घाट की सफाई के लिए कैडेटों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की गई।

- डी.ई.आई प्रेम विद्यालय के कैडेटों ने 14 नवंबर से 21 नवंबर, 2022 तक आयोजित एन.सी.सी. कैंप में कैडेटों ने भाग लिया और पदक जीते – इसमें कई गतिविधियों का आयोजन किया गया। विजेता थे: खुशी – फायरिंग और ड्रिल में सर्वश्रेष्ठ और अनन्या जौहरी, खुशी, कृति,

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

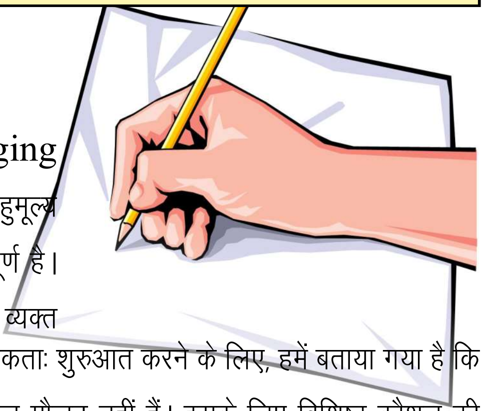

विश्व बैंक समूह द्वारा वर्ष 2019 में 'द चेंजिंग नेचर ऑफ वर्क' (The Changing Nature of Work) पर एक दिलचस्प रिपोर्ट निकाली गई थी, जो इस विषय पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती है, जो स्कूलों, विश्वविद्यालयों और सरकारों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। संगठन के अध्यक्ष द्वारा लिखी गई प्रस्तावना सराहनीय रूप से रिपोर्ट में लिखी हुई सामग्री को व्यक्त करती है और मैं इसके ज़ायके (flavour) को प्रस्तुत करने से बेहतर कुछ और नहीं कर सकता: शुरुआत करने के लिए, हमें बताया गया है कि वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों में कई बच्चे बड़े होकर ऐसी नौकरियों में काम करेंगे जो आज मौजूद नहीं हैं। इसके लिए विशिष्ट कौशल की आवश्यकता होगी – तकनीकी ज्ञान का संयोजन, कैसे, समस्या समाधान और महत्वपूर्ण सोच के साथ–साथ दृढ़ता, सहयोग और सहानुभूति जैसे सॉफ्ट (soft) कौशल। प्रौद्योगिकी में इस तेजी से बदलाव के अलावा श्रमिकों को नौकरी बदलने और नई नौकरियों के लिए जल्दी से अनुकूल होने की आवश्यकता होगी, जिसका अर्थ है कि उन्हें आजीवन शिक्षार्थी बनना होगा।

विकासशील देशों को 'शिक्षा और स्वास्थ्य में अत्यधिक निवेश करने के लिए उच्च प्राथमिकता देने' की आवश्यकता है ताकि वहाँ के लोग मानव पूंजी (human capital) प्राप्त कर सकें। रिपोर्ट में आज सबसे कम मानव पूंजी निवेश वाले देशों के लिए एक चेतावनी है कि भविष्य का उनका कार्यबल केवल एक–तिहाई से एक–आधा उत्पादक होगा, जैसा कि हो सकता है यदि लोग पूर्ण स्वास्थ्य का आनंद लें और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करें। इस प्रकार रिपोर्ट कार्य की बदलती प्रकृति से उत्पन्न होने वाली विभिन्न चुनौतियों का सामना करने में मानव पूंजी की प्रधानता पर जोर देती है। इसे ध्यान में रखते हुए मानव पूंजी पर एक संक्षिप्त लेख इस अंक में शामिल किया गया है।

रिपोर्ट सरकारों को चुनौती देती है – विशेष रूप से विकासशील देशों को – अपने नागरिकों की बेहतर देखभाल करने के लिए और सामाजिक सुरक्षा के सार्वभौमिक गारंटीकृत न्यूनतम स्तर की मांग करती है।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

शिक्षा – मानव पूंजी (Human Capital) की सीढ़ी

विश्व बैंक की 2019 की रिपोर्ट 'द चेंजिंग नेचर ऑफ वर्क' [1] अध्याय 3 (मानव पूंजी का निर्माण) में मानव पूंजी का वर्णन, ज्ञान, कौशल और स्वास्थ्य के रूप में करती है जिसे लोग अपने जीवन में जमा करते हैं, जिससे वे समाज के उत्पादक सदस्यों के रूप में अपनी क्षमता का एहसास कर पाते हैं। इसमें व्यक्तियों, समाजों और देशों के लिए बड़ी अदायगी (payoff) है। यह 1700 के दशक में सच था जब स्कॉटिश अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने लिखा था, ''.....शिक्षा, अध्ययन या शिक्षुता (apprenticeship) के दौरान ......प्रतिभा का अधिग्रहण, एक वास्तविक खर्च होता है, जो एक व्यक्ति में पूंजी है। वे प्रतिभाएँ उनके भाग्य का हिस्सा हैं और इसी तरह समाज की भी।'' यह अभी भी 2018 में सच है।

विकिपीडिया के अनुसार, मानव पूंजी एक व्यापक अर्थ में...... व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से प्राप्त सभी ज्ञान, कौशल, योग्यता, अनुभव, बुद्धि, प्रशिक्षण और दक्षताओं का एक संग्रह है।

कई सिद्धांत स्पष्ट रूप से मानव पूंजी विकास में निवेश को शिक्षा से जोड़ते हैं, और आर्थिक विकास, उत्पादकता, विकास और

नवाचार में मानव पूंजी की भूमिका को अक्सर शिक्षा और नौकरी कौशल प्रशिक्षण के लिए सरकारी सब्सिडी (subsidy) के औचित्य के रूप में उद्धृत किया जाता है।

विश्व बैंक की रिपोर्ट शुरुआती बचपन के विकास कार्यक्रमों के कई उदाहरण देती है जो सबूत प्रदान करते हैं जो बताते हैं कि मानव पूंजी में बुद्धिमानी से निवेश करने की इच्छा रखने वाली सरकारों के लिए, बच्चे के जीवन के पहले एक हजार दिनों में निवेश करने से बेहतर कोई संभावना नहीं है। जीवन की शुरुआत में इस तरह के हस्तक्षेप के बिना, यह अधिक संभावना है कि बढ़ती असमानता का एक सर्पिल (spiral) होगाः शिक्षा और स्वास्थ्य में बाद के सार्वजनिक निवेश से उन लोगों को लाभ होने की संभावना है जो बेहतर शुरुआत करते हैं।

उपरोक्त पृष्ठभूमि के खिलाफ, शिकागो विश्वविद्यालय में नोबेल पुरस्कार विजेता अमेरिकी अर्थशास्त्री प्रो. जेम्स जोसेफ हेकमैन के विचार बहुत प्रासंगिक हैं। हाल ही में भारत की यात्रा में, उन्होंने हेकमैन वक्र (Curve) के संदर्भ में मानव सशक्तिकरण [2] पर अपने काम के बारे में बात की, जो दर्शाता है कि बचपन के कौशल में निवेश पर रिटर्न की दर उम्र के साथ–साथ तेजी से घटती हैः

मानव पूंजी में निवेश का उच्चतम प्रतिफल (Return) प्रसव पूर्व कार्यक्रमों (Programmes) द्वारा प्राप्त होता है, जिसके बाद शुरुआती वर्षों (0–3) के लिए लक्षित (targeted) कार्यक्रम होते हैं। प्री–स्कूल (4–5 वर्ष) कार्यक्रम भी वापसी (Return) की महत्वपूर्ण दर दिखाते हैं। वापसी की दरें बाद की स्कूली शिक्षा और नौकरी प्रशिक्षण (स्कूल के बाद) के दौरान घटती प्रवृत्ति दिखाती हैं। उनके अध्ययनों से पता चला है कि बचपन के कौशल हमारे जीवन की सफलता को आकार देते हैं और जन्म से लेकर पांच वर्ष की आयु तक के बच्चों में संज्ञानात्मक और सामाजिक कौशल के प्रारंभिक विकास का पोषण करते हैं, इसके बाद वयस्कता के माध्यम से प्रभावी शिक्षा के साथ प्रारंभिक विकास को बनाए रखते हुए एक अधिक सक्षम, उत्पादक और मूल्यवान कार्यबल का भुगतान करते हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए लाभकारी सिद्ध होता हैं।

इस स्तर पर यह याद किया जा सकता है कि हमारे श्रद्धेय आध्यात्मिक लीडर्स ने दयालबाग़ में एक शताब्दी से अधिक समय तक शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया है और विकासवादी परिवर्तन की प्रक्रिया के माध्यम से सुपरमैन की अवधारणा को विकसित किया है जिसे लगभग छह साल पहले अभ्यास में लाया गया था और इसका बहुत सार्थक परिणाम निकला है।

मानव पूंजी के आधुनिक सिद्धांत को शिकागो विश्वविद्यालय के एक अन्य अर्थशास्त्री और 2018 नोबेल पुरस्कार विजेता गैरी बेकर द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था, जिन्होंने एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में मानव पूंजी का उपयोग करते हुए अपनी अवधारणा और मॉडलिंग कार्य के लिए यह पुरस्कार जीता।

मानव पूंजी को मापने के लिए विभिन्न तरीके हैं। जैसा कि हाल के एक प्रकाशन [3] में बताया गया है। दशकों से अध्ययन में स्कूली शिक्षा के उपायों को मानव पूंजी के लिए एक प्रॉक्सी (proxy) के रूप में इस्तेमाल किया गया है। यह इस धारणा पर आधारित है कि स्कूल में होने से सीखने की प्रक्रिया स्वयम स्वचालित होती है। कई अध्ययनों से निकले साक्ष्य बताते हैं कि अक्सर ऐसा नहीं होता है। इस प्रकाशन में [3] वर्ष 2000 से 2017 तक वैश्विक आबादी के 98% को कवर करने वाले 164 देशों के लिए विश्व स्तर पर तुलनात्मक सीखने के परिणामों का एक बहुत बड़ा और व्यापक डेटाबेस का उपयोग हार्मोनाइज्ड लर्निंग आउटकम्स (HLO) डेटाबेस बनाने के लिए किया गया है जो दिखाता है कि एक मानव पूंजी सूचकांक - Human Capital Index - (एच सी आई) की ओर ले जाता है जो विकास के साथ दृढ़ता से जुड़ा हुआ है।

इस प्रकाशन के लेखक [3] आगे कहते हैं कि यह डेटाबेस ऐसे क्षण में आया है जब वैश्विक स्तर पर सीखने को मापने और ट्रैक करने के लिए वैश्विक प्रयासों की एक श्रृंखला शुरू की गई है। हालांकि हाल के मॉडलिंग से पता चलता है कि दुनिया 2030 तक सार्वभौमिक प्राथमिक नामांकन के लक्ष्य को प्राप्त करने के रास्ते पर है, अगर सीखना स्थिर रहता है, तो इस उपलब्धि का कोई मतलब नहीं होगा। तदनुसार, सतत विकास लक्ष्यों में सीखने पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है जबकि सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों में मुख्य रूप से स्कूली शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वैश्विक स्तर पर सीखने को मापने और ट्रैक करने का एक और उल्लेखनीय प्रयास विश्व बैंक का मानव पूंजी सूचकांक है जिसमें दुनिया भर के देशों की

मानव पूंजी के स्तर की तुलना की जाती है। इस प्रयास का उद्देश्य मानव पूंजी के उपायों की रिपोर्ट करना है जो देशों को शिक्षा में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। मानव पूंजी सूचकांक में इसके मुख्य घटकों में से एक के रूप में इस डेटाबेस से सीखने के परिणाम शामिल हैं।

ऊपर वर्णित मानव पूंजी सूचकांक का उपयोग करते हुए, विश्व बैंक की रिपोर्ट में 157 देशों के लिए एचसीआई स्कोर की सूची दी गई है, जिसमें सिंगापुर 0.88 के एचसीआई स्कोर के साथ नंबर 1 पर है और चाड (Chad) 0.29 के स्कोर के साथ अंतिम है। भारत 0.44 के स्कोर के साथ, जो अफगानिस्तान और पाकिस्तान को छोड़कर हर दक्षिण एशियाई देश से नीचे है। भारत सरकार ने HCI को त्रुटिपूर्ण [4] के रूप में खारिज कर दिया है और यह कहते हुए प्रतिवाद किया है कि प्रधानमंत्री की विभिन्न स्वास्थ्य और शिक्षा योजनाओं की विश्व बैंक द्वारा अनदेखी की गई थीः जाहिर तौर पर भारत अच्छा कर रहा है। डॉ. कांति बाजपेयी सरकार के इस फरमान से असहमत नजर आते हैं। डॉ. कांति बाजपेयी [4] के अनुसार, स्कूल और विश्वविद्यालय शिक्षा मानव पूंजी निर्माण के मूल में हैं। 30 वर्षों तक भारत और विदेशों में शिक्षा से जुड़े रहने के कारण, उन्हें लगता है कि कुछ अपवादों को छोड़कर, हमारे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय विनाशकारी स्थिति में हैं। यह कम एच सी आई के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। उन्होंने यह भी कहा कि आर्थिक सफलता के लिए मानव पूंजी महत्वपूर्ण है। विनिर्माण, सेवाओं, यहां तक कि आधुनिक कृषि में एक स्वस्थ, साक्षर और कुशल आबादी महत्वपूर्ण है। इसके बिना भारत 7–10% की विकास दर को कायम नहीं रख सकता। यहां तक कि अगर यह कुछ वर्षों के लिए उन स्तरों को छू सकता है, तो विकास अंततः बंद हो जाएगा। श्री देवेश कपूर, जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के पॉल निट्ज़ स्कूल ऑफ एडवांस्ड इंटरनेशनल स्कूल के एशिया कार्यक्रम निदेशक ने एक समाचार पत्र के लेख [5] में निम्नलिखित दो अवलोकन किए हैंः

- खराब शिक्षा कम उत्पादकता की ओर ले जाती है और 'देश ऐसे पर्याप्त लोगों को खोजने के लिए संघर्ष करना जारी रखता है जिनके पास अच्छे शिक्षक बनने के लिए आवश्यक मानव पूंजी है, जो अगली पीढ़ी के भविष्य को और खराब कर रहा है'।

- सभ्य स्कूली शिक्षा का मतलब केवल तीन आर (three R's) सीखना नहीं है, बल्कि यह युवा दिमाग को नए सामाजिक मानदंडों में सामाजिक बनाने के बारे में भी है। खुले में शौच, सार्वजनिक रूप से थूकना या गलियों में कूड़ा फेंकना आदि इसलिए होते हैं क्योंकि भविष्य के नागरिकों को इन व्यवहारिक मानदंडों के महत्व से कभी अवगत नहीं कराया गया था।

इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि दयालबाग़ शिक्षण संस्थान पिछले कई वर्षों से सस्ती कीमत पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है। अप्रैल 2011 में संस्थान के दौरे के दौरान डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी आर.ई.आई. हीरक जयंती स्मृति व्याख्यान ने निम्नलिखित अवलोकन कियाः "जो चीज एक विश्वविद्यालय को महान बनाती है, वह शिक्षा की गुणवत्ता है जो एक विश्वविद्यालय को महान बनाती है। DEI को इस कथन से, letter और sprit में उदाहरण दिया गया है। हमारे पास वर्ष 2020 तक भारत के लिए एक विकसित राष्ट्र – आर्थिक रूप से विकसित राष्ट्र – बनने का रोडमैप है। इसके लिए मौलिक मूल्य आधारित शिक्षा है। मुझे खुशी है कि डी.ई.आई. मूल्य आधारित प्रणाली के साथ शिक्षा को बढ़ावा दे रहा है। उच्च गुणवत्ता, मूल्य–आधारित शिक्षा भी विभिन्न स्कूलों में प्रदान की जाती है जो डी.ई.आई. की छत्रछाया में हैं।

प्रो. वी.बी. गुप्ता
समन्वयक, डी.ई.आई.-डी.ई.पी.

संदर्भः

- The Changing Nature of Work' World Development Report, Published in 2019 by the World Bank Group.
- Times of India, December 11, 2022.
- N. Angrist, S. Djankov, P.K. Goldberg and H.A. Patrinos, World Bank Team drawn from different universities/institutions, Measuring Human Capital using Global Learning data, Nature, Vol 592, 15 April, 2021, 403.
- Dr. Kanti Bajpai, Guest Editorial, Times of India, October 5, 2019.
- Devesh Kapur, 'Sombre Celebrations' Times of India, August 15, 2018.

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

जैसे–जैसे वर्ष धीरे–धीरे व्यतीत हो रहा है, यह एक उचित समय है थोड़ा ठहरकर पीछे देखने का कि हम कितनी दूर आ गए हैं। यह दिलचस्प बात है कि इस अंक के एक लेख में मुख्य शब्द 'नॉस्टैल्जिया' है, अतीत की लालसा – चिंताओं और जिम्मेदारियों से मुक्त अतीत। हालाँकि हर किसी को आगे बढ़ना चाहिए – एच. डब्ल्यू लॉन्गफैलो के शब्दों में, सर्वोपरि ईश्वर को हृदय में स्मरण करते हुए कार्य करें,...... वर्तमान जीवन में कार्य करें! तो आइए हम सब 'जागरूक' बनें, अपना सर्वश्रेष्ठ दें, लेकिन हमेशा स्मरण रखें कि हम जो कुछ भी हासिल करते हैं, वह केवल ईश्वरीय कृपा के कारण ही होता है! 'पूर्व छात्र कथन' (Alumni Bytes) और 'हमेशा के लिए डी.ई.आई.' उस शिक्षा प्रणाली के लिए एक भावनांजलि है जो न केवल ज्ञान बल्कि मानवीय मूल्य भी प्रदान करती है। शिक्षकों और सलाहकारों के रूप में, यदि मूलभूत मूल्यों को प्रदान करने के प्रयास से सहिष्णुता, शांति और आंतरिक शक्ति का मार्ग प्रशस्त करने में मदद मिलती हैं, तो हम तैयार हैं!

हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे aadeisnewsletter@gmail.com पर अपनी टिप्पणियाँ और योगदान साझा करें और जल्द ही उनसे सुनने के लिए आशान्वित रहें!

एकृतियों में पुनर्गमन (Nostalgic Memories)

सूरज भारद्वाज

बैच: बी बी एम (2003), एम बी ए (2004)

जैसे ही हमने उच्च अध्ययन की ओर अपनी यात्रा में पहला कदम उठाया, यह परमानंद की भूमि में प्रवेश करने जैसा था। कॉलेज लाइफ के बारे में जो कुछ भी हमने सुना था वह सब सच होने जा रहा था। थका देने वाले स्कूल के दिन ख़त्म हो गए थे और हम एक नए चरण में प्रवेश करने वाले थे, और माना जाता है कि यह जीवन का सबसे अच्छा चरण है।

कुछ दिनों के लिए उत्साह से आगे बढ़े, और अंतहीन कक्षाओं और कभी न खत्म होने वाली परीक्षाओं के साथ बुलबुला फट गया। एक के बाद एक अनुभव भारी होते गए और जो कुछ चल रहा था उस पर नजर रखना इतना मुश्किल था। कुछ दिन पहले आप स्कूल में अपने सबसे अच्छे दोस्तों के साथ चर्चा और साझेदारी कर सकते थे, लेकिन अब वे सब बहुत दूर थे। जीवन इससे अधिक दयनीय नहीं हो सकता! ......लेकिन फिर आप इन विचित्र अनुभवों को साझा करने के लिए किसी को खोज निकालते हैं। यह कोई है जो न सिर्फ आपकी बात सुनता है बल्कि वास्तव में आपकी यात्रा का हिस्सा है। आप तुरंत जुड़ जाते हैं। और कुछ ही समय में आपका एक गिरोह बन जाता है। एक कॉलेज गिरोह! वास्तव में! और आप इसका हिस्सा हैं! यह संपूर्ण है!

डी.ई.आई. में मेरा चौथा और अंतिम वर्ष dessert (भोजन के बाद खाने के फल/मिठाई आदि) 'पीस डे रेसिस्टांस' था। समान विषयों के साथ समान शिक्षक, लेकिन नए शिक्षाशास्त्र। यह हमें भ्रमित कर गया लेकिन फिर हमारे पास वह एहसास के क्षण थे! हमने महसूस किया कि हमारे प्रोफेसर हमें वयस्कों के रूप में देखते थे और हमें पहले से अध्ययन करने और व्याख्यान में अपने विचारों के साथ आने की आवश्यकता थी। मेरे मन में, यह कॉलेज जीवन का अंतिम पड़ाव था और इतने रास्ते से आने के बाद हमने जीवन में बहुत कुछ देखा था।

कितनी ही तस्वीरें हमारे दिमाग में हमेशा के लिए अंकित हो गई हैं! – ये हमारी यादें बन जाती हैं! हमने फर्श पर मैगी खाई थी, कमोड पर सो गए थे और अनगिनत बिस्तरों पर पटाखों की बौछार कर दी थी। ऐसी पागल हरकतें! इस सब में, हमने यह नहीं देखा कि ये अद्भुत वर्ष कितनी जल्दी समाप्त हो गए। हममें से कई लोगों को अलग–अलग कंपनियों में नौकरी मिल गई और वे दूर–दराज के इलाकों में चले गए, जबकि कुछ नहीं गए। लेकिन फिर भी, हमने रोलरकोस्टर की सवारी जैसे उन चार वर्षों को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया। हमने दीवारों को गिरा दिया और सभी को गले लगा लिया जैसा हमने पहली बार इन पवित्र हॉलों में प्रवेश करते समय किया था। हम अपने साथ उस समय की अमिट यादें लेकर गए थे जब कोई विभाजन नहीं था, जहां कोई ग्रेड नहीं था, जहां कोई लड़ाई नहीं थी, जहां केवल दोस्ती थी, मासूम और पवित्र! हम विदाई लेते हैं और अपनी यात्रा के एक और नए चरण के लिए जुड़ जाते हैं।

पलक झपकते ही साल बीत गए। हम आगे बढ़े....

हम उस ट्रैडमिल पर चलते रहते हैं जो हमें कहीं नहीं ले जाती है और फिर एक दोस्त का जन्मदिन, एक कंपनी की सैर, शनिवार की रात, या कभी–कभी एक सामान्य कार्य दिवस भी पुरानी यादों की जादुई भावना पैदा करता है। हम महसूस करते हैं कि हमने कॉलेज में जो कुछ किया उससे कहीं अधिक कर सकते थे, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कितने खुश हैं, हमें कॉलेज की तुलना में कभी भी खुशी का समय नहीं मिलेगा, क्योंकि यह किसी को भी प्राप्त होने वाला बेहतरीन समय है। समयान्तराल!

हमेशा के लिए डी.ई.आई.!

गरिमा श्रीवास्तव
बैच: थियोलॉजी में पी जी डिप्लोमा (2012), एम बी ए (2018),
एम ए (थियोलॉजी) (2021)
वर्तमान में, पी एच डी कर रही हैं, प्रबंधन, सामाजिक विज्ञान संकाय

दयालबाग़ शैक्षिक संस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में मेरी अविस्मरणीय यात्रा 2011 में शुरू हुई जब मैं 30 साल की थी। हाँ, आपने इसे सही पढ़ा! मुंबई में डी.ई.आई.–डी.ई.पी. सूचना केंद्र के माध्यम से मुझे पहली बार शिक्षा के इस महान संस्थान के बारे में पता चला।

मैं केंद्र में प्रस्तावित किए जाने वाले अन्य पाठ्यक्रमों के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक थी और सौभाग्य से मुझे धर्मशास्त्र में एक बहुत ही दिलचस्प पाठ्यक्रम के बारे में पता चला – धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, जिसमें मैं शामिल हुई। मैंने पी जी डी टी को सावधानीपूर्वक तैयार किए गए पाठ्यक्रम के रूप में पाया जो दुनिया के प्रमुख धर्मों का निष्पक्ष तुलनात्मक अध्ययन प्रदान करता है। पाठ्यक्रम इतना मनोरंजक और आकर्षक था कि मॉड्यूल से धार्मिक अवधारणाओं ने मेरे दोस्तों, परिवार और सहकर्मियों के साथ भी दिलचस्प बातचीत की शुरुआत की। डी.ई.आई. अनुशासन का पालन करते हुए, और पी जी डी टी के अद्भुत संकाय के साथ बातचीत करते हुए फिर से एक छात्र बनने का पूरा अनुभव इतना आकर्षक और सार्थक था कि मैं ऐसे और अवसरों की कामना करती हूँ।

और लो! यह सौभाग्य की बात थी कि मैंने जल्द ही मुंबई में डी.ई.आई.–डी.ई.पी. के माध्यम से MBA प्रोग्राम में दाखिला ले लिया। अब तक मुझे एहसास हो गया था कि मुझे और भी अधिक लाभ हो सकता है, क्योंकि डी.ई.आई. सीखने के लिए एक बहुत ही खुला वातावरण प्रदान करता है। कोविड–19 महामारी ने 2020 की शुरुआत में हम पर रोक लगाई और हम अब बाहर नहीं जा सकते थे। लेकिन फिर भी, ऑनलाइन कक्षाओं की पेशकश करते हुए, मुंबई केंद्र सक्रिय था। इसने मुझे धर्मशास्त्र में अपनी रुचि को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया और मैंने धर्मशास्त्र में एमए कार्यक्रम में दाखिला लिया।

इस अवधि के दौरान घर से काम करने के विकल्पों के कारण, मैंने और मेरे परिवार ने दयालबाग़ की यात्रा की और मैंने आगरा में डी.ई.आई.–डी.ई.पी. सूचना केंद्रों में अपनी परीक्षा देना जारी रखा। मुझे परीक्षा के लिए डी.ई.आई. परिसर में जाने का एक अनूठा अवसर भी मिला। मैंने पहले भी परिसर का दौरा किया था लेकिन इस बार यह एक अलग अनुभव था।

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद सीखने की मेरी इच्छा तेज हो गई और वह भी डी.ई.आई. कैंपस से ही। तभी मैंने पीएचडी करने के लिए डी.ई.आई. के रिसर्च एंट्रेंस टेस्ट (आर ई टी) की तैयारी करने का फैसला किया। उनकी कृपा से, मैं आर ई टी को पास करने में सक्षम हो गयी और डी.ई.आई. की गौरवान्वित परिसर छात्रा बन गयी। अब एक साल हो गया है तब से जब मैंने अपनी पी एच डी शुरू की थी। अध्ययन हेतु मैं लगभग प्रतिदिन परिसर का दौरा कर रही हूँ, प्रोफेसरों और छात्रों से मिल रही हूँ, और अपना शोध कार्य कर रही हूं। डी.ई.आई. का एक विशाल परिसर है, जिसमें सौंदर्यपूर्ण रूप से बनाई गई इमारतें हैं, जहाँ कई विषय संचालित किए जाते हैं। छात्रों के लिए एक समान पोशाक अनुशासन पैदा करती है और सीखने का वास्तविक वातावरण बनाती है। शिक्षा के प्रति डी.ई.आई. का दृष्टिकोण संपूर्ण मानव विकसित करने के उद्देश्य से समग्र है। छात्रों को शारीरिक श्रम के महत्व को समझने में मदद करने के लिए खेतों में श्रम और निःस्वार्थ सेवा में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। कोविड पाबंदियों के दौरान, संस्थान के

खुले स्थान क्लासरूम बन गए थे! महामारी के दौरान शायद ही कोई कामकाजी दिन बर्बाद हुआ हो!

जब मैं पिछले एक दशक में फैले डी.ई.आई. के साथ अपने जुड़ाव को देखती हूँ, तो मुझे कुछ दिव्य ईश्वरीय योजना द्वारा निर्देशित होने के लिए धन्य और भाग्यशाली महसूस होता है, जो मुझे ज्ञानी और चरित्र वान व्यक्ति के रूप में सतत् आकार देता है। मेरे लिए, डी.ई.आई. हमेशा के लिए है!

मेंटरशिप प्रोग्राम: एक सार्थक प्रतिबद्धता
आकांक्षा सिन्हा, बैच: पी जी डी थियोलॉजी (2020),
डी.ई.आई. वर्तमान में, सीनियर मैनेजर, बौस्टन कंसल्टिंग ग्रुप

डी.ई.आई. के साथ मेरा जुड़ाव तब शुरू हुआ जब मैं गुड़गांव डी.ई.आई.–डी.ई.पी. सूचना केंद्र में विभिन्न कार्यक्रमों के लिए एक सूत्रधार के रूप में मुझे सौंपे गए कर्त्तव्यों का पालन कर रही थी। इसने मुझमें रुचि पैदा की और जैसा कि मैं डी.ई.आई. के साथ एक गहरा संबंध बनाने के लिए उत्सुक थी, मैंने अपनी रुचि के पाठ्यक्रम – धर्मशास्त्र में खुद को नामांकित करने का फैसला किया।

इसके साथ ही मैंने इस प्रतिष्ठित संस्थान की छात्रा के रूप में अपनी यात्रा शुरू की। इस पाठ्यक्रम का अनुसरण करते हुए मुझे स्वयं एक छात्र के रूप में बहुत मजबूत मूल्य प्रणाली का अनुभव हुआ। दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों की संरचना, अपनाया गया दृष्टिकोण और शिक्षण के प्रति समर्पण बेजोड़ है। इसमें जोड़ी गयी सामग्री समृद्ध हैं, सलाहकारों की प्रतिबद्धता, और सीखने की कठोरता जो डीईआई को दूसरों से पृथक करती हैं। मेंटर्स द्वारा प्रदान की गई निरंतर प्रेरणा और साथियों की प्रतिस्वधत्मिक उपस्थिति के कारण ने इसे एक संपूर्ण अनुभव बना दिया। पाठ्यक्रम के अंत तक, मैंने जो हासिल किया था, मैं उससे अत्यधिक सार्थक संतुष्ट थी।

पाठ्यक्रम से स्नातक होने के बाद, और जुड़े रहने का आग्रह जारी रहा। और उस समय, मुझसें AADEIs के दिल्ली NCR चौप्टर के तहत एक मेंटरशिप प्रोग्राम के लिए संपर्क किया गया था। मैंने हाल ही में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने वाले और अपनी नौकरी के पहले वर्ष में एक परामर्शग्राही का समर्थन और मार्गदर्शन करने के लिए खुद को एक संरक्षक के रूप में पंजीकृत किया। अभिविन्पास के दौरान, मैं डी.ई.आई. के पूर्व छात्रों द्वारा अपने जूनियर्स का समर्थन करने की संकल्पना और विचारशीलता से चकित थी। पुरानी यादों को फिर से जोड़ने और फिर से जीने के लिए परामर्श ग्राही में उत्साह, और अपने स्वयं के हित के क्षेत्र में अच्छी तरह से स्थापित पूर्व छात्रों से सीखने और मार्गदर्शन लेने के लिए मेंटर्स में उत्साह सकारात्मक परिणाम देता है। मैं इस तरह की पहल का हिस्सा बनकर खुश हूँ। मुझे विश्वास है कि DEI के साथ मेरी भागीदारी बढ़ती रहेगी और मैं कई और सुखद आश्चर्यों के लिए तैयार हूँ जो किसी अन्य स्थान पर अनुभव नहीं किया जा सकता है!

पूर्व छात्र कथन (Alumni Bytes)

दयालबाग़ में शिक्षित होने की सबसे बड़ी उपलब्धि है...

''...डी.ई.आई. में व्यावहारिक और अत्यधिक समृद्ध अनुभव। इसने मेरे विश्वास को सुदृढ़ किया कि डी.ई.आई. का क्या मतलब है, विशेष रूप से प्रासंगिकता के साथ उत्कृष्टता पर इसका ध्यान और इसकी मूल्य–आधारित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा''।
–हरीश दुआ, बैच पी जी डिप्लोमा इन थियोलॉजी (2009)
वर्तमान में, सलाहकार, इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया

''...DEI के मूल मूल्य, एक मज़बूत पेड़ की तरह है जो मज़बूत शाखाओं के साथ सीधा खड़ा होता है, जिसने हमें इन सभी वर्षों में पोषित किया है और कठिन समय में ताकत प्रदान की है।''
–पल्लवी सत्संगी शर्मा, एम बी एम बैच (1996)
वर्तमान में, निदेशक एच आर ग्लोबल शेयर्ड सर्विसेज, एन एक्स पी सेमीकंडक्टर्स

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई.

संरक्षक
प्रो. पी.के. कालरा

मुख्य संपादक
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक
डॉ. सोना दीक्षित
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी
डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्यों
डॉ. चारु स्वामी
डॉ. नेहा जैन
डॉ. सौम्या सिन्हा
श्री आर.आर. सिंह
प्रो. प्रवीण सक्सेना
प्रो. वी. स्वामी दास
डॉ. रोहित राजवंशी
डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक
डॉ. नमस्या

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक
प्रो. पी.के. कालरा
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा,
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री राकेश मेहता

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni (AADEIs & AAFDEI)

संपादक
प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति
डॉ. सरन कुमार सतसंगी,
प्रो. साहब दास
डॉ. बानी दयाल धीर
श्रीमती शिफाली सत्संगी
श्रीमती अरुणा शर्मा
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. गुरप्यारी भटनागर
डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

पंजीकृत कार्यालय:
108, साउथ एक्स प्लाजा –1,
साउथ एक्सटेंशन पार्ट II,
नई दिल्ली–110049।

प्रशासनिक कार्यालय:
पहली मंजिल, 63,
नेहरू नगर,
आगरा –282002।

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन: दयालबाग़ प्रेस